शिवशक्ति सरस्वती माँ

28. मम्मा ने कभी हंसी-मज़ाक करके अथवा व्यर्थ बातें करके अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाया। मम्मा किसी का ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित होने नहीं देती थीं। सदा उस माँ-बाप की ओर ही इशारा करती थीं। मम्मा में बहुत मधुरता थीं तो निर्भयता भी उतनी ही थी। मम्मा कहा करती थीं कि जीवन में जिस भगवान से डरना चाहिए वही हमारा बन गया, फिर डरना किससे? डरता वह है जो पाप कर्म करता है। हम तो श्रेष्ठ कर्म, सत्कर्म करने वाले हैं, ईश्वर की मत पर चलने वाले हैं, तो हम डरें क्यों?

29. खाने-पीने में भी मम्मा की कोई आसक्ति नहीं थी। उन्होंने कभी यज्ञ-प्रसाद की ग्लानि अथवा टीका-टिप्पणी नहीं की। जो मिले, जैसा मिले, जितना भी मिले उसको आदर से और अनासक्त भाव से स्वीकार किया।

30. ज्ञान की देवी, विद्या की देवी होते हुए भी, मम्मा का पढ़ाई से इतना प्यार था कि वह दिन में तीन-तीन बार मुरली पढ़ा करती थीं। मम्मा कहती थीं, देखो, मुरली को जितनी बार पढ़ेंगे उतनी बार हमें ज्ञान का नया-नया ख़ज़ाना मिलेगा।

31. मम्मा अर्जुन की तरह एकाग्र थीं। नम्बर वन में जाने का लक्ष्य रखा। मम्मा हम बच्चों को सदा कहा करती थीं कि सदा विचार ऊँचे रखो तो बाप समान बन जायेंगे। सदा बाप को देखो। आप स्वयं को देखो, किसी अन्य को नहीं देखो। बाबा व ड्रामा पर निश्चय रखो तो कर्मातीत बन जायेंगे।

32. मम्मा की दृष्टि शक्तिशाली होती थी। एक दिन मम्मा चाँदनी रात में बैठकर योग कर रही थीं। मैं जाकर उनके सामने बैठी, तो मम्मा ने दृष्टि दी और मैं ध्यान में चली गयी। ध्यान में देखा कि चारों तरफ़ प्रकाश ही प्रकाश है और उसके बीच में आलमाइटी बाबा दिखायी दे रहे हैं।

33. योग कैसे करें? यह भी मम्मा ने हमें सिखाया। वे अपने साथ संदली पर बिठाकर हमें योग कराती थीं। हमारी अवस्था को चेक करती थीं। कर्मणा सेवा करते समय भी मम्मा अपनी ही स्थिति में रहती थीं। मैंने एक बार मम्मा से पूछा कि "मम्मा, आप अभी गेहूँ साफ़ कर रही हैं, अभी आपका क्या संकल्प चल रहा है?" मम्मा ने कहा, "हम गेहूँ साफ़ नहीं कर रहे हैं, हम साक्षीद्रष्टा होकर कर्मेन्द्रियों से साफ़ करा रहे हैं। मैं नहीं कर रही हूँ, करा रही हूँ।"